लोग क्या कहेंगे
यह सोचकर
जीवन जीते है।
भगवान क्या सोचेंगे कभी
यह सोचा है।
– अज्ञात

स्वच्छ शहर का तमगा

स्वच्छता सड़कों पर झाड़ू फेरने और कूड़े को कहीं छिपा देने से नहीं आ जाएगी। इसका संबंध रहन–सहन के तौर–तरीकों से है और इसके लिए ढांचागत बदलाव की जरूरत है। सरकार को इसके लिए बड़े पैमाने पर निवेश करना होगा।

राधा जोशी।

केंद्र सरकार की ओर से कराए गए स्वच्छ सर्वेक्षण 2019 में एक बार फिर इंदौर ने सबसे स्वच्छ शहर का तमगा हासिल किया है। इस तरह इसने हैट्रिक लगाई है। सर्वे में छत्तीसगढ़, झारखंड और महाराष्ट्र को स्वच्छता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले देश के तीन राज्यों में गिना गया है जबकि उत्तराखंड के गौचर को गंगा किनारे बसे सर्वश्रेष्ठ कस्बे का गौरव प्राप्त हुआ है। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को हुई थी। इस तरह इसके पांच साल पूरे होने को हैं।

मोदी सरकार का यह एक अहम प्रॉजेक्ट रहा है। पांच वर्षों में इसने समाज के सामने स्वच्छता का अजेंडा मजबूती से रखा है। देश में स्वच्छता को लेकर बने माहौल का ही असर है कि आज गांवों में कई लड़कियों ने अपनी ससुराल में शौचालय बनाने पर जोर दिया और इसके लिए डटी रहीं। कुछ ने तो लड़के के यहां शौचालय न होने के कारण शादी तक से इनकार कर दिया। गांवों में लोग अब खुद आगे आकर शौचालय बनवा रहे हैं। यह परिवर्तन निरंतर प्रचार की ही देन है। लेकिन लगता है, सरकारी मशीनरी में इसके तौर–तरीकों को लेकर कोई भ्रम है, या फिर सरकार इसे स्पष्ट करने में असफल रही है। स्वच्छता सड़कों पर झाड़ू फेरने और कूड़े को कहीं छिपा देने से नहीं आ जाएगी।

इसका संबंध रहन–सहन के तौर–तरीकों से है और इसके लिए ढांचागत बदलाव की जरूरत है। सरकार को इसके लिए बड़े पैमाने पर निवेश करना होगा। आज कई बड़े शहरों में कूड़ा डालने और उसकी प्रॉसेसिंग की कोई मुकम्मल व्यवस्था ही नहीं है। शहर का मास्टर प्लान बनाते समय अक्सर डंपिंग ग्राउंड या लैंडफिल साइट बनाने पर ध्यान ही नहीं दिया जाता। फिर बिना किसी ठोस नजरिए के कोई भी जगह इस काम के लिए तय कर दी जाती है।

लेकिन इसके बनने से पहले ही आसपास कॉलोनियां काट दी जाती हैं, जहां रहने वाले बगल में खड़े हो रहे कूड़े के पहाड़ का विरोध शुरू कर देते हैं। इसे देखते हुए कूड़ा डालने की जगह वहां से हटाने की घोषणा कर दी जाती है। कई शहरों में तो सीवर लाइनें ही बहुत कम लोगों को ध्यान में रखकर डाली गई हैं। किसी दिन सिंगल स्टोरी प्लान को मल्टी स्टोरी कर दिया जाता है और पांच साल के अंदर सीवर सिस्टम जवाब दे जाता है। तकनीकी बारीकियों को आगे के लिए छोड़ें। अभी तो ज्यादातर नगर निगम अपने खर्चों के लिए राज्य सरकारों पर निर्भर करते हैं। उनके गठन में सतही राजनीति हावी रहती है, जिससे उनके कामकाज का कोई लंबा खाका ही नहीं बनता। जाहिर है, स्वच्छता सिर्फ प्रचार अभियान चलाने से नहीं आएगी। इसके लिए टाउन प्लानिंग के स्तर से तैयारी करनी होगी और हर स्तर पर घपले रोकने होंगे। नगरपालिकाओं को अपनी आय के स्रोत खोजने होंगे और अपने कामकाज को प्रफेशनल रूप देना होगा।

यज्ञ क्यों ?

धर्म-दर्शन

डॉ. अर्चिका दीदी। यज्ञ के पर्यावरणीय महत्व के बारे में तो हम सब जानते हैं कि यह वातावरण को शुद्ध करता है। गूगल करते ही इतनी जानकारी तो साफ हो जाती है। पर आध्यात्मिक महत्व के बारे में?

जैसा कि मैं साधकों से कहती आई हूं कि कैलाश मानसरोवर की यात्रा महज भौगोलिक नहीं, बल्कि अपने अंतर्मन की यात्रा भी है और ऐसे में, यज्ञवेदी पर गूंजने वाली वैदिक ऋचाएं आपकी इस यात्रा की मनोकामना पूरी करती हैं। इसलिए किसी शुभ कार्य से पहले, आप हजार काम छोड़कर यज्ञ करें।

सुख–शांति–समृद्धि की चाह रखने वाला व्यक्ति यज्ञ का त्याग नहीं करता। जो यज्ञ का त्याग करता है, वह वास्तव में भगवान का त्याग करता है। यज्ञ में सबकी समृद्धि, सबके विकास के लिए आहूति दी जाती है। जो यह आहूति देने से बचता है, वह मनुष्य नहीं, दानव समान है।

संपादकीय

गेम की गिरफ्त

दुनियाभर के बच्चों में लोकप्रिय ऑनलाइन गेम श्पबजीश (प्लेयर अननोन्स बैटलग्राउंड्स) के कई खतरनाक परिणाम सामने आ रहे हैं। इसने एक नशे या लत का रूप ले लिया है। जो भी एक बार इसकी गिरफ्त में आ रहा है, उसका इससे निकलना मुश्किल हो रहा है। इसे खेलने वाले घर–परिवार और दोस्तों से कटकर एक आभासी दुनिया में जीने लगते हैं। पिछले दिनों गाजियाबाद में रहने वाला दसवीं का एक छात्र इस खेल के चक्कर में अपना घर छोड़ कर चला गया। कुछ समय पहले दिल्ली के वसंतपुर क्षेत्र में पबजी खेलने से मना करने पर एक लड़के ने अपने मां–बाप की हत्या कर दी थी।

मुंबई के कुर्ला इलाके में एक युवक ने इसी के कारण अपनी जान दे दी। जम्मू–कश्मीर में इसकी लत में फंसकर एक फिजिकल ट्रेनर ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया। जालंधर में तो इसके लिए 15 साल के एक किशोर ने अपने पिता के अकाउंट से पचास हजार रुपये निकाल लिए। मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में एक युवक पबजी खेलने में इस कदर मशगूल था कि उसने पानी की जगह एसिड पी लिया। गनीमत है कि उसकी जान बच गई। ऐसी घटनाएं आए दिन सुनने को मिल रही हैं। 12–12 घंटे तक गेम खेलने की वजह से बच्चों की नींद गायब हो रही है और उनमें एंग्जाइटी की समस्या बढ़ रही है।

यह खेल धीरे–धीरे उन्हें मनोरोगी बना रहा है। हर हफ्ते 8 से 22 साल आयु वर्ग के 4–5 नए मरीज एम्स पहुंच रहे हैं। नौकरीपेशा युवा भी डॉक्टरों के पास काउंसलिंग के लिए जा रहे हैं। आज दुनिया भर में 40 करोड़ बच्चे और युवा इस गेम को हर दिन खेल रहे हैं जबकि भारत में इनकी संख्या करीब 5 करोड़ है।

कुछ अमेरिकी सीनेटरों ने ईरान में कार्रवाई का विरोध करते हुए पूछा कि ट्रंप ने बिना कांग्रेस को सूचना दिए ऐसा कदम क्यों उठाया?

ट्रंप भी बैकफुट पर

अनुप शर्मा।

अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध का खतरा फिलहाल टल गया लगता है। बुधवार को इराक में दो अमेरिकी सैनिक अड्डों पर ईरान द्वारा मिसाइल हमले के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के बयान से ऐसा लगा कि वह फिलहाल आग को और भड़काने के मूड में नहीं हैं। ट्रंप ने ईरान के साथ शांति की पेशकश करते हुए कहा कि ईरान के हमले का जवाब देने के लिए वे दूसरे विकल्प देख रहे हैं। इसकी व्याख्या उन्होंने आर्थिक प्रतिबंध लगाकर ईरान को दंडित करने के रूप में की। उन्होंने कहा कि अमेरिका उन सबके साथ शांति के लिए तैयार है, जो शांति चाहते हैं। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि ईरान को एटम बम वह नहीं बनाने देंगे।

इस पर ईरान ने तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है जिसका अर्थ यह बन रहा है कि वह भी संयम से काम लेना चाहता है। ईरानी जनरल कासिम सुलेमानी के मारे जाने के बाद ईरान के सुप्रीम लीडर खामनेई ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी, लेकिन तेहरान ने बदले में जिस तरह की कार्रवाई की, उससे लगा कि अभी उसका ध्यान अमेरिका को उकसाने से ज्यादा अपने नागरिकों का गुस्सा शांत करने पर है। कहा जा रहा है कि ईरान

ने जान–बूझकर ऐसी जगह को निशाना बनाया, जहां किसी अमेरिकी की जान नहीं जाने वाली थी। उसका मकसद नुकसान पहुंचाना कम, चेतावनी देना ज्यादा लगा।

इराक ने आधिकारिक रूप से बताया है कि ईरान की ओर से उसे इस हमले की जानकारी दे दी गई थी। संभवतः इराक ने इसे अमेरिकी अधिकारियों तक पहुंचा दिया और वॉशिंगटन ने नुकसान से बचने के लिए एहतियाती कदम उठा लिए। दूसरी तरफ ईरान की ही तरह ट्रंप भी बैकफुट पर नजर आ रहे हैं। शायद इसलिए कि जनरल कासिम सुलेमानी को मारने को लेकर उनके फैसले को अपने देश में पर्याप्त समर्थन नहीं मिला। अमेरिका के मित्र राष्ट्र भी इस मसले पर उसके साथ नहीं खड़े थे। इजरायल तक ने मुंह मोड़ लिया था। कुछ अमेरिकी सीनेटरों ने ईरान में कार्रवाई का विरोध करते हुए पूछा कि ट्रंप ने बिना कांग्रेस को सूचना दिए ऐसा कदम क्यों उठाया?

अमेरिकी कांग्रेस में राष्ट्रपति के युद्ध संबंधी अधिकारों की कटौती पर प्रस्ताव आ चुका है और जल्द ही इस पर वोटिंग होने वाली है। लेकिन चुनावी साल में ट्रंप को अमेरिकी जनता के सामने खुद को लगातार आक्रामक भी दिखाना है, इसलिए वे ईरान को दूसरे तरीकों से सबक सिखाने या प्रतिबंध और बढ़ाने की बात कर रहे हैं। जो भी हो, एक बात तो तय है कि इस कठिन मोड़ पर दोनों राष्ट्र प्रमुखों ने समझदारी का परिचय दिया है। दोनों को पता है कि उनकी टकराहट दुनिया के लिए बहुत भारी पड़ने वाली है। स्लोडाउन और अनेक संकटों से जूझ रही विश्व अर्थव्यवस्था के लिए यह काफी घातक सिद्ध होगा। अमेरिका और ईरान, दोनों के करीबी मुल्कों और पूरी विश्व बिरादरी को उनके बीच का तनाव घटाने की कोशिश करनी चाहिए।

अष्टयोग- 4922

7	5		4		1	6
2	24	1	27	6	36	3
	3	2	4	5	6	
	31		31		30	
	7	4	6	3	2	
4	39	7	39	4	25	2
6	1		3		2	4

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4921 का हल

5	3	2	4	1	6	7
6	27	1	24	2	33	3
2	5	3	4	7	1	6
1	30	6	37	3	34	5
7	1	5	3	6	2	4
4	38	7	40	4	26	2
3	7	4	6	5	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

आजकल के रिश्तों के पीछे चल रहे नकाबपोश रिश्ते

प्रणव प्रियदर्शी। वरिष्ठ तो वे मुझसे बहुत हैं, लेकिन मित्र भी रहे हैं और सहकर्मी भी। इसके अलावा साहित्य में भी उनका ऊंचा कद है। स्वाभाविक रूप से वे बहुतों के जीवन में शामिल हैं लेकिन मेरे जीवन में ऐसे कम ही लोग हैं जिनके साथ मैं ये तीनों विशेषण जोड़ सकूं। बहरहाल, बात तब की है जब हम दोनों का करियर गर्दिश के दौर से गुजर रहा था। कुछ ऐसा हुआ था कि हमारी नौकरी एक साथ छूट गई थी। मुझे तो खैर कौन पूछने वाला था लेकिन वे लिखत–पढ़त की दुनिया में जाने–माने नाम थे। सो सबको पता था कि बगैर अपनी किसी गलती के वे बेरोजगार हो चुके हैं। ऐसी ही दशा में एक दिन उनके घर पर हम अपनी–अपनी चिंता बांट रहे थे कि फोन की घंटी बजी। उस तरफ एक बड़े संपादक थे।

इन्होंने आवाज पहचान ली। साहब, फलां जी का फोन आया था दो दिन पहले। उनके तो बड़े मजे हो गए हैं। कंपनी ने उन्हें घर तो दिया ही है, एक बहुत बड़ी सी गाड़ी भी दे दी है।' उधर से कुछ जवाब आया तो फिर बोले, 'हम्म, आपको नहीं दे रहे ऐसा कुछ?' 'मैंनेजमेंट भी अजीब है। पता नहीं कैसे सोचते हैं ये लोग।